1857 में शाहाबाद विद्रोह के बीर स्वतंत्रता सेनानी बाबू निशान सिंह और बीर बाकुडा बाबू हरकिशुन सिंह का योगदान : एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण

मो0 सोहराब आलम

शाहाबाद के 1857 के बिद्रोह के सबसे बड़े नेता बाबू हरकिशुन सिंह हुए है। बाबू हरकिशुन सिंह के बाद जिस नेता ने इतिहास कारों का ध्यान खींचा है वे हैं 60 वर्षीय बाबू निशान सिंह। भारत के शहीदों के इतिहास के साथ विश्वास घाती देश द्रोही लोगो का शर्मनाक इतिहास भी है।

बाबू हरकिशन सिंह ने 25 जुलाई 1857 ई0 में ढ़ाई महीने तक कि कर्तब्य मिमूढ़ बैढी दानापुर की देशी पलटन को जिसमें तीन हजार लोग थे, बिद्रोह कराया। 28 जुलाई को कप्तान डनवर की फौज को आरा में पराजित किया। 7 जून 1858 ई0 को सासाराम के आतातायी मजिस्ट्रेट कालोनल स्ट्रेटन के कोर्ट मार्शल इजलास में बाबू निशान सिंह का एक तरफा खौफनाक मुकदमा चला।

शाहाबाद के दो शहीद शिरोमणि निशान सिंह और बाबू हरकिशुन सिंह की संक्षेप में यही कहानी है। बिहार का इतिहास लिखने वालों को शहीद निशान सिंह और हरकिशुन सिंह की कोई जानकारी नहीं है। बिहार सरकार की नीति ही श्री बाबू के जमाने से बन गयी कि कुँवर सिंह का नाम ही राज्य में चलाया जाय। राज्य की राजनीति में सरकार विश्वास करती है। गरीब का बेटा स्वतंत्रता सेनानी नही हो सकता, यह विश्वास रहा बिहार सरकार का 1857ई0 का बिद्रोह बाबू कुँवर सिंह से ही आरम्भ माना जाता है और उसका अंत भी बाबू कुँवर सिंह में हो जाता है।